15 Aug 2016

Vocational Guidance

व्यावसायिक निर्देशन :- निर्देशन की प्रक्रिया का प्रारम्भ सन् 1908 ई० में अमेरिका के बोस्टन नगर के फ्रैंक पारसन्स महोदय के प्रयासों से हुआ।

* सन 1908 ई० में फ्रैंक पारसन्स महोदय ने अमेरिका में ही व्यावसायिक निर्देशन की स्थापना करके व्यावसायिक निर्देशन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने का कार्य किया।

* साधारण शब्दों में शैक्षिक प्रक्रिया के अन्तर्गत व्यावसायिक निर्देशन का तात्पर्य किसी व्यवसाय का चुनाव, व्यवसाय की तैयारी, नौकरी करने अथवा सफलता प्राप्त करने से है।

नेशनल व्यावसायिक निर्देशन Association

* National Vocational Guidance Association of America ने बताया है कि व्यावसायिक —

इसके लिए तैयारी करने प्रवृष्ठ होने तथा इसमें प्रगति करने हेतु एक व्यक्ति को दी जाने वाली सहायता की प्रक्रिया है।

* अन्तरराष्ट्रीय श्रम सम्मेलन 1949 के अनुसार व्यावसायिक निर्देशन अवसरों के लाभ उनके सम्बन्ध को समुचित रूप में ध्यान रखते हुए व्यावसायिक चयन एवं प्रगति सम्बन्धी व्यक्ति की समस्याओं का समाधान करने हेतु की जाने वाली सहायता है।

क्रो एवं क्रो के अनुसार :- "व्यावसायिक निर्देशन की व्याख्या प्रायः सीखने वाले को किसी व्यवसाय के चयन उसमें तैयारी और उसमें प्रगति करने में सहायता रूप में की जाती है।"

व्यावसायिक निर्देशन के उद्देश्य :-

विद्यार्थियों को कौन-कौन से व्यावसायिक विकल्पों के सम्बन्ध में सूचनाएं एकत्र करने में सहायता करना।

/5/2015

* विद्यार्थियों को यह बताना कि विभिन्न व्यवसायों के लिए किन-किन गुणों योग्यताओं एवं क्षमताओं की आवश्यकता होती है।

* विद्यार्थियों को विभिन्न व्यवसायों का व्यक्तिगत तथा सामाजिक महत्व बताना।

* विद्यार्थियों को विभिन्न व्यवसायों का निरीक्षण करने की सुविधा प्रदान करना।

* छात्रों को विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थानों से परिचित कराना।

* छात्रों में व्यवसाय सम्बन्धी सूचनाओं का विश्लेषण करने की क्षमता का विकास करना।

* विद्यालय के अन्दर तथा बाहर विद्यार्थियों को ऐसे अवसर प्रदान करना जिससे उनकी व्यावसायिक रुचियों का विकास हो सके।

* छात्रों को योग्यतानुसार व्यवसाय चुनने के फैसले में सहायता देना। व्यवसाय चुनने के उपरान्त छात्रों को अनुकूल परिस्थितियाँ स्थापित करने में सहायता देना।

* विकलांग तथा कमजोर छात्रों को व्यावसायिक योजनाओं के सम्बन्ध में सहायता देना।

व्यावसायिक विकास की अवस्थाएं :-

जोन्स एवं नायर - ने व्यावसायिक विकास की निम्नलिखित 5 ~~अवस्थाएं मानी~~ है।

① **पहली अवस्था** :- कुछ विद्वान इसे तादात्मीकरण (Adjustment) (सामाजिकरण) की अवस्था मानते हैं। जिसकी आयु 5-14 वर्ष तक होती है।

यहाँ पर बालक परिवार के किसी बड़े सदस्यों के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है इस अवस्था में बालक बातें करना और्थिक तथा सामाजिक सत्य का सम्प्रत्यय विकसित

करना, गलत तथा सही में विभेद करना तथा इस दृष्टि का विकास करना की जब वह बड़ा होगा तब कार्य करेगा अर्थोपार्जन करेगा तथा पारिवारिक दायित्वों का पालन करेगा।

(2) **द्वितीय अवस्था :-** यह अवस्था 10-15 वर्ष तक होती है, जिसमें बालक उद्यमशीलता के लिए प्रशिक्षण अर्जित करता है, जिम्मेदारी की भावना तथा यह बोध विकसित करता है, कि कार्य करने का क्या अर्थ होता है।

इस अवस्था में बालक खेल के स्थान पर कार्य को महत्व देना सीखने लगता है।

(3) **तृतीय अवस्था :-** इसका समय 15-25 वर्ष तक होता है। इस अवस्था में किशोर रोजगार क्षेत्र का चयन प्रारम्भ कर देता है तथा सामान्यतः इस अवस्था के अन्त तक किसी व्यवसाय में लग जाता है। किन्तु यदि उसे रोजगार के दिशा में सफलता नहीं मिलती तो वह विसंगतियों को भी प्रारम्भ कर देता है।

(4) **चतुर्थ अवस्था :-** इस अवस्था की आयु 25-40 वर्ष होती है,

इस अवस्था में व्यक्ति कार्य करने लगता है एवं वह उत्पादक व्यक्ति बन जाता है। साथ ही अपने कार्य क्षेत्र में प्रोन्नति (Growth) करने लगता है।

पंचम अवस्था :- इस अवस्था के काल को पतन स्थिति-वादी भी कहा जाता है। जिसकी आयु 40 वर्ष से प्रारम्भ होकर लगभग 40 वर्ष तक चलती है।

• इस अवस्था में व्यक्ति नौकरी विकल्प को कम महत्व देकर सामाजिक विकल्प को अधिक महत्व देना प्रारम्भ कर देता है।

Note

Donald ~~की~~ E Super ने अपनी पुस्तक Self Concept Theory में इन विकास की अवस्थाओं को निम्न रूपों में बताया है।

1. विवृद्धि अवस्था ⟶ जन्म से 14 साल तक
2. अन्वेषणात्मक अवस्था ⟶ 15 – 24 साल तक
3. स्थापना अवस्था ⟶ 24 – 44 साल तक
4. अनुरक्षण या व्यवस्थापन अवस्था ⟶ 45 – 64 साल तक
5. पतन अवस्था ⟶ 65 – के बाद

व्यावसायिक चयन के निर्धारक :-

1. जैविकीय कारक : लिंग, लम्बाई, शारीरिक छवि इत्यादि
2. वैयक्तिक कारक :- बुद्धि, अभिक्षमता, रुचि तथा व्यक्तित्व।
3. पारिवारिक कारक :- भौतिक परिवेश एवं मूल्य स्वास्थ्य तथा आर्थिक कारक इत्यादि।
4. विद्यालयीय कारक :- स्कूल का वातावरण, अध्यापक तथा परामर्शदाता इत्यादि।

सामाजिक सांस्कृतिक कारक - स्वीकार्यता पूर्वाग्रह सामाजिक स्थिति इत्यादि।

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कारक - आर्थिक दशा। नीतियाँ तथा उदारीकरण।

भूमण्डलीय कारक :- समाजवाद, पुंजीवाद, साम्यवाद आर्थिक मंदी तथा आतंकवाद इत्यादि।

21 AUG 2015

व्यावसायिक विकास के सिद्धान्त :- निर्देशन की प्रक्रिया के अन्तर्गत किसी भी बालक को कैसे आत्मनिर्भर बनाये उसे उत्पादन शील बनाये जिससे व्यावसायिक निर्देशन चयन की प्रक्रिया सरल हो जाये। इसके लिए व्यावसायिक विकास के सिद्धान्त को जोनस महोदय ने 3 श्रेणियों में विभाजित किया है। इस हेतु उन्होंने सन् 1970 ई० में विभिन्न शोध किये।

(1) शीलगुण उपागम :- इस श्रेणी में फ्रैन्क पारसन्स महोदय का नाम सबसे प्रमुख है।

फ्रैन्कपारसन्स ने इस उपागम सिद्धान्त में तीन कारकों को स्वीकार किया।

(A) बालक को व्यावसायिक निर्देशन के लिए उसकी आवश्यकता -ओं- रुचियों, आकांक्षाओं, सीमाओं, संसाधनों तथा कारणों को समझना।

(B) व्यावसायिक निर्देशन के कार्य के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता की शर्तों दशाओं लाभ तथा हानियों क्षतिपूर्ति अवसरों एवं संभावनाओं के बारे में ज्ञान प्राप्त करना।

(C) व्यावसायिक निर्देशन के परिप्रेक्ष्य में शीलगुण उपागम के इन दोनों समूहों के मध्य वास्तविक आधार तैयार करके सम्बन्ध स्थापित करना।

(2) विकासात्
Adjust
...

* इस विका
के लिए
से सबसे
होती है।
* इसके बा
को आर्थि
* इसके ब
फिर उ
आवश्य

* सुपर
(1)
(2)
(3)
(4)
(5)

(3) संर

को ..
आ..
निर्दे..
Rou..
व्याव..
कव..

(2) विकासात्मक उपागम :- Adjust करना (तादात्मीकरण)

इस उपागम की श्रेणी में गिंज़बर्ग तथा सुपर महोदय के सिद्धान्तों को सम्मिलित किया जाता है।

* इस विकासात्मक उपागम में व्यावसायिक निर्देशन की प्रक्रिया को विभिन्न विकास की कुछ अवस्थाओं में बांटा गया है, जिनमें से सबसे पहली अवस्था तादात्मीकरण (Adjustment) होती है।
* इसके बाद व्यावसायिक निर्देशन में बालक मौलिक क्रियाओं को अर्जित करता है।
* इसके बाद चयन एवं तैयारी की अवस्था में पहुँचता है और फिर उत्पादकता के उत्कर्ष की आवश्यकता तथा अवाप्ति की आवश्यकता आती है।
* सुपर ने व्यावसायिक विकास की 5 अवस्थाएं मानी है।
  1. Growth Age - विवृद्धि अवस्था
  2. Exploration Age - ~~स्थापना~~ अन्वेषणात्मक अवस्था
  3. Steblishment Age - स्थापना अवस्था
  4. Montainonce Age - व्यवस्थापन अवस्था
  5. Diclaim Age - पतन अवस्था

(3) संरचनात्मक उपागम:- इस उपागम की श्रेणी में व्यावसायिक निर्देशन की प्रक्रिया को कालक्रमीन किया जाता है तत्पश्चात विशिष्टताओं के आधार पर वस्तु या तथ्य की संरचना को स्पष्ट करके निर्देशन का प्रयत्न किया जाता है।

Row महोदय के अनुसार - व्यक्ति द्वारा अपनाए जाने वाले व्यावसायिक निर्देशन का दो कारकों के आधार पर वर्गीकरण किया जाता है।

Scanned with CamScanner